बाबाजी की अमर कथा

पॉचवा अध्याय

''जय बाबे दी''

बाबाजी सुबह शाम भक्ति में लीन रहते। जब कभी दौपहर में धूपतेज हो जाती तो बाबाजी के उपर सर्प शेषनांग छाया किया करता था तथा बाबाजी के धूने पास जब ज्यादा गर्म होती तो ठण्डी–ठण्डी हवा चला करती थी । यह सब लीला देखकर आस–पास के लोग बाबाजी को शक्तिमन अवतारी जीव मानते थे। सो इस तरह बाबाजी की महिमा का प्रचार धीरे–धीरे होने लगा।

बाबाजी कि महिमा का प्रचार सुनकर गुरू गौरखनाथ जी अपने तीनसौ साठ शिष्यो के साथ अपनी मण्डली लेकर शाहतलाई कि ओर चल पडे जिस वट वृक्ष के नीचे बाबाजी तप किया करते थे वहीं गौरख मण्डली ने अपना डेरा जमा लिया। गौरख मण्डली के सदस्य आस–पास के लोगो से पूछने लगे यहां कोई चमत्कारी साधू कहां रहाता है। लोग कहने लगे कि आप जिसके बारे मे पुछ रहे हो यह स्थान उसी महात्मा का है जिस स्थान पर आपने डेरा लगाया है ।

वह इस समय वन खण्डी में गउये चराने गया है। और गरूना झाडी के नीचे तप कर रहा है। इतना सुनकर गौरखनाथ अपनी मण्डली के साथ बाबाजी के पास ढुढते–ढुढते पहुंचे और कहने लगे कि हे बालक यहां एक साधू तप करता है वह कहां है बाबाजी ने गौरखनाथ को साधू रूप जानकर नमस्कार किया गौरख नाथ ने बाबाजी को आर्शिवाद दिया बाबाजी ने कहां आप जिस साधू को ढूढरहे है वह मै ही हूॅ। गौरखनाथ बाबाजी का सुन्दर रूप देखकर आर्श्चय–चकित होकर होकर विचार करने लगा कि इस बालक ने छोटीसी आयु मे ही इतनी शक्ति प्राप्त कर ली है ।

जिसकी महिमा दूर–दूर तक फैली हुई है क्यो न मै इसे अपन शिष्य बनालू यह विचार करके गौरखनाथ बाबाजी से कहने लगे बेटा हमे बडी भूख लगी हुई है हमारे लिये जल्दी भोजन का प्रबन्ध करों। यह सुनकर बाबाजी कहने लगे कि मुझे तो अपने ही भोजन का पता नही मै किसी के घर मांगने नहीं जाता मै आपे तीनसौ साठ शिष्यो कि बडी मण्डली के लिये इतनी जल्दी भोजन का प्रबन्ध कैसे करू। गौरख नाथ ने कहां चाहे कैसे भी हो कुछ न कुछ खाने के लिये लाओ हमे बडी भूख लगी है ।तब बाबाजी गुरू गौरखनाथजी से कहां आप सर्व मण्डली लेका वट वृक्ष स्थान पर चलों वहॉ पर विश्राम करने की अच्छी जगह है । तब सर्वसिद्ध गौरखनाथ बाबाजी के साथ–साथ वट वृक्ष के नीचे आ गये फिर बाबाजी ने गुरू गौरखनाथजी से कहां कि हे गुरू गौरखनाथ मेरे पास तो सिर्फ ये गउंऐ है जिनका मै आपको दूध पिलासकता हूॅ यह कहकर बाबाजी ने गउओं को आवाज मारी। सारी गउऐं भागती हुई बाबाजी के पास आ गयी ।

गुरू गौरखनाथजी ने यह चमत्कार देखकर बाबाजी से कहा कि हम साधू जूठा दूध नहीं पीते। हमे तो किसी औसर (बछियॉ) गाय का दूध पिलाओ । बाबाजी ने कहां जैसी आपीक इच्छा बबाजी ने अपने गुरू श्री दत्तात्रियजी को याद कर एक औसर गाय की पीठ पर थपकी मारी और गुरू गौरखनाथजी से कहा लाओ अपनी चिप्पी दो । गुरू गौरखनाथजी को यह वरदान था कि उनकी चिप्पी कभी नहीं भरेगी। बाबाजी ने जैसे

ही चिप्पी गाय के थनों के नीचे लगायी वैसे ही छमाछम करता हुआ गाय के चारों थनों से दूध निकलने लगा और कुछ ही समय में चिप्पी लबा–लब भर गयी। बबाजी मुस्कराकर गुरू गौरखनाथजी से कहने लगे लो गोरखनाथ माता का प्रसाद ग्रहण करो। यदि इसके बाद भी कुछ कसर रह जायेगी तो फिर भोजन का भी प्रबन्ध हो जायेगा। गोरखनाथ जी इस अचम्भे को देखकर हैरान रह गये। कि जो चिप्पी कभी नहीं भर सकती वह लबा–लब दूध से भरी हुई है।

गोरखनाथ ने बहुत जोर लगाया कि चिप्पी का दूध खत्म हो जाये। लेकिन गुरू गोरखनाथ सहित तीनसौ साठ शिष्यों ने छक कर दूध पीया परन्तु चिप्पी दूध से लबा–लब भरी रही। गोरखनाथ बाबाजी की यह महान शक्ति देखकर आश्चर्य कर रहे थे और मन में विचार करने लगे कि जैसे भी हो इसे अपना शिष्य बनाना है तब गोरखनाथ ने बाबाजी से कहा कि अगर तू हमारा शिष्य बन जायेगा तो मैं इन सब शिष्यों का तुझे मुखिया बना दूंगा। बाबाजी ने कहा महाराज कोई और सेवा हो तो बताओ मैं आपका शिष्य बनने को तैयार नहीं हूं।

यह सुनकर गोरखनाथ ने बाबाजी से कहां कि मै अपनी शक्ति द्वारा तुझे अपना शिष्य बना लूंगा। यह कहकर गोरखनाथ ने अपनी मृगछाला उपर आकाश में उडाइ जो देखते ही देखते बहुत उंची चलीगयी और कहा कि तुम इस मृगछाला को नीचे उतार कर दिखाओ नहीं तो मेरा शिष्य बन जाओ। बालक ने अपने गुरू का नाम लेकर चिमटा हवा में उछाला जो देखते ही देखते मृगछाला के उपर पहुंच गया। मृगछाला सीधे बाबाजी के चरणों में आकर रूक गयी। और

चिमटा वहीं आकाश में रह गया। तो बाबाजी ने गोरखनाथ से कहा तुम मेरा चिमटा उतार कर दिखाओ। गोरखनाथ अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग करके भी उस चिमटे को नहीं उतार पाया। बाबाजी न जैसे ही आवाज मारी वैसे ही चिमटा उनके पास आ गया। परख करते–करते संध्या हो गयी तब बाबाजी ने कहा हे गोरखनाथ आप भी विश्राम कीजीये मैं भी जिस माई की ये गउऐं हैं। उन्हें वापस करके आता हूॅं। ऐसा कहकर बालक माई रत्नों के घर पहुंच गये और कहने लगे। कि हे माता लो अपनी गउओं को सभाल लो अब मैं जा रहा हूं ।आप जब भी मुझे याद करेंगी मैं आपके हर कार्य में सहायता करूंगा। रत्नों माँ ने बाबाजी से रूकने का बडा आग्रह किया, परन्तु बाबाजी अपने धूने पर आ गये।

सुबह हुई तो गोरखनाथ जी ने कहॉ कि नौ नाथों में मेरी गिन्ती होती है तुझे मेरा शिष्य बन जाना चाहिए अगर तुने नहीं माना तो मै अपनी मण्डली द्वारा तुम्हे जबरदस्ती अपने नाम कि मुन्दरें डलवा सकता हूॅं। फिर भी बाबाजी ने चेला बन्ने के लिये मना कर दिया । गोरखनाथ ने अपनी मण्डली को आदेश दिया कि इस बालक को पकड लो और जबदस्ती इसके कान में मेरे नाम कि मुन्दरे डाल दों। गोरखनाथ का आदेश पाकर गुरू गोरखनाथ कि मण्डली ने बाबाजी को घेरा डालकर पकड लिया और जबरदस्ती कान में सुराख करने करने लगें । जैसे ही बाबाजी के दाहिने हाथ का कान फाडा तो बाबाजी के कान में से खून कि बजाये दूध कि धारा बहने लगी और सुराख भी अपने आप मिट गया इसी तरह दुसरे कान का भी सुराख बन्द हो गया, इसलिये बाबा जी को दूधाधारी कहते है।

बाबाजी ने अपने गुरू को याद किया तभी शिव कि कृपा से एक मोर बाबा जी के सामने आ गया बाबाजी उस मोर पर बैठे व पवन रूप होकर चलेगये। गोरखनाथ अपनी नाकामयाबी पर बडा शर्मशार हुआ और कहने लगा कि है, कोई मेरा शिष्य जो बाबा बालक नाथ को मेरे पास पकडकर ला सके। तभी गोरखनाथ कि मण्डली में से भरतहरी बाबा बालक नाथ को ढुढने चल पडा।

''जय बाबे दी''